श्री चैत्यभक्ति विधान

(श्री गौतमस्वामी रचित चतुर्थकालीन चैत्यभक्ति पर आधारित)

-रचयित्री-
गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 482
ISBN-978-93-84003-58-6

श्री चैत्यभक्ति विधान

(श्री गौतमस्वामी रचित चतुर्थकालीन चैत्यभक्ति पर आधारित)

–विधान रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

ऋषभगिरि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विराजमान 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव मूर्ति के निर्माण की प्रेरणास्रोत दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में आयोजित अक्षय तृतीया पर्व-वैशाख सुदी तीज (9 मई 2016) के शुभ अवसर पर प्रकाशित।

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि.सं. 2542, वैशाख सुदी तीज	मूल्य
1100 प्रतियाँ	9 मई 2016	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादकः–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यौ, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।

भगवान महावीर स्वामी हम सभी का मंगल करें। श्री गौतम गणधर स्वामी हम सभी का मंगल करें। श्री कुंदकुंद आदि पूर्वाचार्य हम सभी का मंगल करें और जैनधर्म हम सभी के लिए मंगलकारी होवे।

इस एक मंगलाचरण में श्री महावीर स्वामी से लेकर परम्परागत सभी पूर्वाचार्यों की स्तुति की गई है। आज हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें भगवान महावीर की साक्षात् वाणी को पढ़ने-सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। तीर्थंकर की परम्परा, गणधर की परम्परा, चतुर्विध संघ-मुनि-आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका (श्रावक-श्राविका) की परम्परा अनादि है। यह अनादि काल से चली आ रही है और अनंतकाल तक चलती रहेगी।

वर्तमान में बीसवीं शताब्दी में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का हम सभी पर परम उपकार हैं, जो कि हमें नित्य नई-नई बातों से, प्राचीन रहस्यों से अवगत कराती हैं। इनके जीवन का हरपल नई-नई कृतियों को, नई-नई रचनाओं को लिए रहता है। जिनकी लेखनी में, वाणी में सरस्वती का वास है तभी तो षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ की 16 पुस्तकों पर संस्कृत टीका लिखकर जैनसमाज को एक महान कृति प्रदान की है। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया है। 400 ग्रंथों की रचना की है। जिनमें अभी कई ग्रंथ अप्रकाशित हैं। आज सारे विश्व में जिनके द्वारा रचित इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र आदि विधानों की धूम मची है।

विधानों की श्रृंखला में पूज्य माताजी ने **'श्री चैत्यभक्ति विधान'** रचकर प्रदान किया है। यह विधान चतुर्थकालीन श्री गौतमस्वामी के मुख से निकले हुए चैत्यभक्ति पर आधारित है। यह अत्यन्त चमत्कारिक विधान है। इस चैत्यभक्ति विधान का 1-1 श्लोक अनन्त अर्थ को लिए हुए हैं। इस चैत्यभक्ति में मुख्यरूप से श्री गौतमस्वामी ने नवदेवताओं की वन्दना की है तथा तीन लोक में जितने भी कृत्रिम और अकृत्रिम जिनमन्दिर हैं, उन सबकी वन्दना भी की है।

ऐसे चतुर्थकालीन चैत्यभक्ति पर रचा किया गया विधान वास्तव में एक अनुपम कृति है। पूज्य माताजी का जैन समाज पर महान उपकार है जो कि नित्य ही नूतन कृतियों को जन्म देती रहती हैं।

पूज्य माताजी की दिव्यशक्ति एवं पावन प्रेरणा से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण होना, अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक का विशेष प्रभावना के साथ सम्पन्न होना, यह सब एक आश्चर्य की बात है। 'गिनीज बुक ऑफ द वर्ल्ड' में प्रतिमा का नाम दर्ज होना यह दिगम्बर जैन समाज के लिए और भी विशेष गौरव की बात है।

जैन समाज की धरोहर पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, यही भगवान से मंगल प्रार्थना है। यह विधान आप सभी के जीवन में मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है।

श्री गौतमस्वामी प्रणीत चैत्यभक्ति के विषय में

-गणिनी ज्ञानमती माताजी

आज से 2572 वर्ष पूर्व श्रावण कृष्णा एकम् को इस चैत्यभक्ति की रचना हुई है। उसी दिन श्री गौतमस्वामी ने दीक्षा लेकर गणधर पद प्राप्त किया है व उसी दिन भगवान महावीर की प्रथम दिव्यध्वनि खिरी है।

पं. लालाराम जैन शास्त्री ने भी वीर निर्वाण संवत् 2557 ईसवी सन् 1931 में चैत्यभक्ति का अनुवाद करके 'दशभक्त्यादि संग्रह' पुस्तक में आज से 85 वर्ष पूर्व ये वाक्य लिखे थे-

''चैत्यभक्ति की टीका के प्रारंभ में लिखा है कि—

श्री वर्द्धमानस्वामिनं प्रत्यक्षीकृत्य गौतमस्वामी ''जयति भगवान्'' इत्यादि स्तुतिमाह।

अर्थ—गौतम स्वामी ने भगवान् महावीर स्वामी के प्रत्यक्ष दर्शन कर **'जयति भगवान्'** इन शब्दों से प्रारंभ करते हुए स्तुति की।

बृहद्द्रव्यसंग्रह की संस्कृत टीका में भी लिखा है :—

ततश्च जयति भगवान् इत्यादि नमस्कारं कृत्वा जिनदीक्षां गृहीत्वा कचलोचनानन्तरमेव चतुर्ज्ञानसप्तर्द्धिसम्पन्नास्त्रयोपि (गौतम-अग्निभूत-वायुभूत-नामानः) गणधरदेवाः संजाताः। गौतमस्वामी भव्योपकारार्थैः द्वादशांगश्रुतरचनां कृतवान्।

तदनन्तर गौतम-अग्निभूति-वायुभूति इन तीनों विद्वानों ने ''जयति भगवान्'' इत्यादि शब्दों से स्तुति करते हुए भगवान महावीर स्वामी को नमस्कार करके, जिनदीक्षा ग्रहण की और केशलोच करने के अनन्तर ही मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान चारों ज्ञान उनको प्रगट हो गये तथा सातों प्रकार की ऋद्धियाँ प्रगट हो गईं। इस प्रकार वे तीनों ही मुनि उसी समय भगवान् महावीर स्वामी के गणधर हुए। उनमें से गौतमस्वामी ने भव्य जीवों का उपकार करने के लिए द्वादशांग श्रुतज्ञान की रचना की।

इस ऊपर के कथन से यह भी सिद्ध हो जाता है कि यह चैत्यभक्ति महावीर स्वामी के केवलज्ञान के समय की बनी हुई है अर्थात् चतुर्थकाल में जब तेतीस वर्ष साढ़े आठ महीना शेष रह गये थे, उस समय की यह रचना है। ऐसी-ऐसी चतुर्थकाल की रचनाएँ न जाने कितनी हैं, जो अज्ञानता के कारण हमें मालूम नहीं हैं।''

वर्तमान में वीर नि. सं. 2542 चल रहा है। भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्ति से 30 वर्ष पूर्व केवलज्ञान हुआ था, अतः आगे आने वाली श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को इस चैत्यभक्ति के 2572 वर्ष पूर्ण होकर 2573वीं चैत्यभक्ति जयंती आयेगी।

आप प्रतिवर्ष श्रावण कृ. 1 को वीरशासन जयंती पर्व के साथ-साथ चैत्यभक्ति-जयंती पर्व भी मनाएं।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी हुए हैं। समवसरण में भगवान महावीर स्वामी का दर्शन करते ही श्री गौतम स्वामी के मुख से सर्वप्रथम भगवान के गुणगान में संस्कृत भाषा में 35 श्लोकों में चैत्यभक्ति प्रस्फटित हुई—

जयति भगवान्! हेमाम्भोज-प्रचार-विजृंभिता।
वमरमुकुटच्छायोद्-गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ।।

चतुर्थकालीन इसी चैत्यभक्ति पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, दिव्यशक्ति, परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने **'श्री चैत्यभक्ति विधान'** की रचना कर दी है। इस विधान में सर्वप्रथम संस्कृत भाषा में 11 श्लोकों में मंगलाचरण करते हुए पूज्य माताजी ने लिखा है–

चतुर्थकाल-उत्पन्ना, गीर्वाण्यां प्रथमा कृतिः।
चैत्यभक्तिः स्तुतिश्चैषा, कुर्यान्नित्यं सुमंगलम्।।

अर्थात् चतुर्थकाल में उत्पन्न संस्कृत भाषा में प्रथम रचना चैत्यभक्ति— भगवान की स्तुति हम सभी का नित्य ही मंगल करें।

मंगलाचरण के पश्चात् पूजा नं 1 **महावीर समवसरण पूजा** है, इसमें भगवान महावीर के पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं उनकी पंचकल्याणक भूमि कुण्डलपुर, जृंभिका, प्रथम देशनास्थली राजगृही-विपुलाचल पर्वत एवं निर्वाण भूमि पावापुरी के अर्घ्य हैं।

पूजा नं 2 में **श्री चैत्यभक्ति पूजा** है। इसकी पूजा में पूज्य माताजी ने लिखा है कि—चैत्यभक्ति महास्तोत्र है इसकी पूजा से जन्म-मरण के दुख दूर होंगे—

जजूं चैत्यभक्ती महास्तवन को।
मिटाऊँ स्वयं के जनम और मरण को।।

इस चैत्यभक्ति पूजा में अष्टक के बाद में श्री गौतमस्वामी विरचित चैत्यभक्ति के श्लोक एवं स्वरचित पद्यानुवाद को लेते हुए 35 अर्घ्य मंत्र सहित हैं। जैसे—

ॐ ह्रीं श्री महावीरस्वामि-श्रीविहारमाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृत-चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

35 अर्घ्य के बाद अंचलिका का मंत्र सहित 1 पूर्णार्घ्य है। फिर 108 बार जाप्य मंत्र एवं जयमाला है। इसकी जयमाला में 20 काव्यों में पूज्य माताजी ने पूरे जिनागम के स्वाध्याय का सार भर दिया है।

पूजा नं 3 में **श्रीगौतमस्वामी की पूजा** है। इसके बाद अन्त्यमंगल में महार्घ्य दिया है, फिर प्रशस्ति है। इसकी प्रशस्ति में माताजी ने लिखा है कि वर्तमान में वीर नि. सं. 2542 चल रहा है। अतः 2542 में 30 वर्ष और मिलाने से आज से 2572 वर्ष पहले श्री गौतमस्वामी ने भगवान महावीर के समवसरण में श्रावण कृष्णा एकम को चैत्यभक्ति की रचना की है। उसी दिन भगवान महावीर स्वामी की दिव्यध्वनि खिरी है।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में श्री ऋषभदेव उद्यान में वैशाख वदी दूज (24 अप्रैल 2016) को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी **'आर्यिका दीक्षा षष्ठिपूर्ति महोत्सव'** में सप्तम पट्टाचार्य श्री अनेकांत सागरजी महाराज, एलाचार्य श्री निजानंद सागर जी महाराज आदि 30-35 साधुओं के सानिध्य में यह विधान पूर्णकर भगवान के श्री चरणों में नूतन कृति समर्पित की, यह पूज्य माताजी के लिए अत्यन्त हर्ष की बात थी।

प्रशस्ति के बाद में **'श्री चैत्यभक्ति महास्तोत्र व्रत'** दिया है। इस व्रत में 36 व्रत हैं, इसमें व्रत की विधि एवं जाप्य मंत्र दिए हैं। इसके बाद मेरे द्वारा रचित श्री गौतम गणधर चालीसा, श्री चैत्यभक्ति विधान की मंगल आरती एवं भजन हैं।

इस विधान में कुल 3 पूजा, 35 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं तीन जयमालाएँ हैं।

यह श्री चैत्यभक्ति विधान अतिशयकारी विधान है। इस विधान को करने, कराने वाले सभी भव्य जीव अपने जीवन में एक न एक दिन नवनिधी भण्डार को भरेंगे, नवलब्धि को प्राप्त कर एक दिन मोक्ष महल को भी प्राप्त करेंगे, यही इस विधान का सार है।

दो शब्द

–आर्यिका सुव्रतमती (संघस्थ)

मंगलं स्यान्महावीरो, श्री गौतमश्च मंगलम्।
जिन शासनमाचंद्रं, स्थेयात् कुर्याच्च मंगलम्।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं। उनके 3 बार दर्शन करने वाली एवं उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली और उनके प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त करने वाली, जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, वर्तमान में पीछीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परम पूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जिन्होंने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

सच्चे ज्ञान की प्राप्ति धर्म गुरुओं से सहज ही हो जाती है जैसा कि श्री पूज्यपाद स्वामी ने इष्टोपदेश में कहा है–

अज्ञानोपास्तिरज्ञानं, ज्ञानं ज्ञानि समाश्रयः।
ददाति यत्तु यस्यास्ति, सुप्रसिद्धमिदं वचः।।

अर्थात् अज्ञानी की उपासना–संगति से प्राणी अज्ञान प्राप्त करता है तथा ज्ञानी की उपासना से ज्ञान प्राप्त करता है, क्योंकि 'जिसके पास जो कुछ है वह वही वस्तु प्रदान करता है' यह सुप्रसिद्ध वचन है।

'श्री चैत्यभक्ति विधान' की रचना एक महान रचना है क्योंकि यह चैत्यभक्ति चतुर्थकाल में श्री गौतम स्वामी के मुख से निकली हुई है। पूज्य माताजी कहती हैं कि आज हमारा परम सौभाग्य है कि चतुर्थकालीन न जाने कितनी रचनाएं हमारे पास हैं, लेकिन अज्ञानतावश हमें ज्ञात नहीं है। श्री गौतमस्वामी के मुख से निकले जो भी पाठ हैं जैसे–चैत्यभक्ति, दैवसिक-रात्रिक प्रतिक्रमण, पाक्षिक प्रतिक्रमण, गणधरवलय मंत्र, श्रावक प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, निषीधिका दण्डक, सुदं मे आउस्संतो ! आदि अनेकों पाठ हैं, जिन्हें हम साधु लोग प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि में पढ़ते रहते हैं।

पूज्य माताजी ने वीर नि. सं. 2540-41 में **'श्री गौतम गणधर वर्ष'** मनाया। जिसमें वर्षभर गौतमस्वामी के गुणों का गान, चालीसा, संगोष्ठी गणधरवलय विधान आदि का आयोजन हुआ। श्री गौतम गणधर वाणी पुस्तक, श्री गौतम स्वामी प्रणीत प्रतिक्रमण पाठ में परिवर्तन एक विचारणीय विषय, चैत्यभक्ति अपरनाम जयति भगवान्! स्तोत्र, श्री गणधरवलय मंत्र स्तोत्र, श्री गौतमस्वामी अभिषेक एवं पूजा, गणधरवलय मंत्र स्तोत्र संग्रह, श्री गौतम गणधर वाणी पर अमृतवर्षिणी टीका के 4 भाग, जिनमें 3 भाग प्रकाशित हो चुके हैं चौथा भाग प्रकाशित होने वाला है। इस प्रकार से श्री गौतमस्वामी की अनेक कृतियों का पूज्य माताजी द्वारा संकलन आदि करके प्रकाशन हुआ है। श्री गौतमस्वामी की प्रवचन मुद्रा की 108 मूर्ति एवं 108 चरण का निर्माण, 108 मण्डल बनाकर गणधरवलय विधान का आयोजन आदि महान कार्य सम्पन्न हो चुके हैं।

पूज्य माताजी ने भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीर स्वामी तक एवं श्री गौतमस्वामी आदि पूर्वाचार्यों की कृतियों पर अनेक कार्य करके जैन समाज पर महान उपकार किया है। ऐसी माता युग-युग तक जीवन्त रहें, यही मंगल कामना एवं पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

श्री गौतमस्वामी का जीवन परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आर्यखंड में एक ब्राह्मण नाम का नगर था। वहाँ एक शांडिल्य नाम का ब्राह्मण रहता था। उसकी भार्या का नाम स्थंडिला था, वह ब्राह्मणी बहुत ही सुन्दर और सर्व गुणों की खान थी। इस दम्पत्ति के बड़े पुत्र के जन्म के समय ही ज्योतिषी ने कहा था कि यह गौतम समस्त विद्याओं का स्वामी होगा। उसी स्थंडिला ब्राह्मणी ने द्वितीय गार्ग्य पुत्र को जन्म दिया था, वह भी सर्वकला में पारंगत था, इन्हीं ब्राह्मण की दूसरी पत्नी केशरी के पुत्र का नाम भार्गव था। इस प्रकार ये तीनों भाई सर्व वेद-वेदांग के ज्ञाता थे। इन तीनों भाइयों के इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति नाम भी प्रसिद्ध हैं। वह गौतम ब्राह्मण किसी ब्रह्मशाला में पाँच सौ शिष्यों का उपाध्याय था। ''मैं चौदह महाविद्याओं का पारगामी हूँ, मेरे सिवाय कोई और विद्वान नहीं है।'' ऐसा अभिमानी था।

भगवान् महावीर को केवलज्ञान प्रगट होकर समवसरण की रचना हो चुकी थी, किन्तु दिव्यध्वनि नहीं खिर रही थी। 66 दिन व्यतीत हो गये। तभी सौधर्म इन्द्र ने समवसरण में गणधर का अभाव समझकर अपने अवधिज्ञान से ''गौतम'' को इस योग्य जानकर वृद्ध का रूप बनाया और वहाँ गौतमशाला में पहुँचकर कहते हैं-

''मेरे गुरु इस समय ध्यान में होने से मौन हैं अतः मैं आपके पास इस श्लोक का अर्थ समझने आया हूँ।'' गौतम ने विद्या के गर्व से गर्विष्ठ हो पूछा-''यदि मैं इसका अर्थ बता दूंगा तो तुम क्या दोगे ?'' तब वृद्ध ने कहा-यदि आप इसका अर्थ कर देंगे, तो मैं सब लोगों के सामने आपका शिष्य हो जाऊंगा और यदि आप अर्थ न बता सके तो इन सब विद्यार्थियों और अपने दोनों भाइयों के साथ आप मेरे गुरु के शिष्य बन जाना।'' महा अभिमानी गौतम ने यह शर्त मंजूर कर ली, क्योंकि वह समझता था कि मेरे से अधिक विद्वान इस भूतल पर कोई है ही नहीं। तब वृद्ध ने यह काव्य पढ़ा-

''धर्मद्वयं त्रिविधकालसमग्रकर्म, षड्द्रव्यकायसहिताः समयैश्च लेश्याः।
तत्त्वानि संयमगती सहितं पदार्थै-रंगप्रवेदमनिशं वद चास्तिकायं।।''

तब गौतम ने कुछ देर सोचकर कहा-''अरे ब्राह्मण! तू अपने गुरु के पास ही चल। वहीं मैं इसका अर्थ बताकर तेरे गुरु के साथ वाद-विवाद करूँगा।'' इन्द्र तो चाहता ही यह था, वह वृद्ध वेधषारी इन्द्र गौतम को समवसरण में ले आया।

वहाँ मानस्तंभ को देखते ही गौतम का मान गलित हो गया और उसे सम्यक्त्व प्रगट हो गया। गौतम ने अनेक स्तुति करते हुए भगवान् के चरणों को नमस्कार किया तथा अपने पाँच सौ शिष्यों और दोनों भाइयों के साथ भगवान् के पादमूल में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। अन्तर्मुहूर्त में ही प्रथम गणधर हो गये।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान- टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि- आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)
जाति- अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र-** गोयल, **नाम-** कु. मैना
माता-पिता- श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत- ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
क्षुल्लिका दीक्षा- चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती
आर्यिका दीक्षा- वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व- अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।
डी.लिट्. की मानद उपाधि- सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा- हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा- पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।
शैक्षणिक प्रेरणा- 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा- जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री सम्मेदशिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

भजन

रचयित्री – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–जिन्दगी प्यार का गीत है.....

गौतम गणधर की वाणी सुनो,
ज्ञान अमृत के स्वादी बनो।
वीर प्रभु दिव्यध्वनि को सुनो,
अपने आतम में उसको गुनो।।टेक.।।
आज हम सबका यह पुण्य है, पाया धरती पे नर जन्म है।
इसमें जिन भक्ति ही मुख्य है, गुरु की वाणी से शिव सौख्य है।
वीर वाणी का अमृत चखो,
गुरु गौतम के श्रुत को सुनो।। गौतम.।।1।।
आयुष्मन्तों ! सुना मैंने है, ये वचन गणधर स्वामी कहें।
मुनि–श्रावक ये दो धर्म हैं, शक्तिसम इनका पालन करें।।
सुदं मे आउस्संतो सुनो,
श्रुत का चिन्तन करो औ गुनो।।गौतम.।।2।।
गणिनी श्री ज्ञानमती माता ने, गणधर वाणी बताई हमें।
उसको प्रतिदिन पढ़ें हम सभी, ''चंदनामति'' अमर हो कृती।।
वीर प्रभु के चरण में नमो,
गुरु गौतम के भी पद नमो।।गौतम.।।3।।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. महावीर समवसरण पूजा	3
3. श्री चैत्यभक्ति पूजा	11
4. अथ प्रत्येक अर्घ्य (35 अर्घ्य)	14
5. जयमाला	27
6. श्री गौतमस्वामी पूजा	31
7. महार्घ्य–अन्त्यमंगल	35
8. प्रशस्ति	36
9. श्री चैत्यभक्ति महास्तोत्र व्रत (36 व्रत)	37
10. श्री गौतम गणधर चालीसा	41
11. श्री चैत्यभक्ति विधान की मंगल आरती	43
12. भजन-गणिनी ज्ञानमती माता पे अभिमान करो रे.....	44

श्री चैत्यभक्ति विधान का मण्डल

कुल पूजा-3, अर्घ्य-35, पूर्णार्घ्य-1, महार्घ्य 1, जयमाला-3

श्री चैत्यभक्ति विधान

मंगलाचरण

मंगलं भगवानर्हन्, भगवान् वृषभेश्वरः।
मंगलं सर्वतीर्थेशाः, मंगलं जिनशासनम्।।1।।

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।2।।

मंगलं जिनधर्मः स्यात्, जिनवाणी च मंगलम्।
मंगलं जिनचैत्यानि, जिनालयाश्च मंगलम्।।3।।

सप्तकोट्यो जिनागाराः, लक्षाणि च द्विसप्ततिः।
भावनेषु स्थिताः सर्वे, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।4।।

चतुःशताष्टपंचाशत्, मध्यलोके जिनालयाः।
भुक्तिमुक्ति प्रदातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।5।।

व्यन्तराणां जिनागाराः, संख्यातीता विभान्त्यानि।
स्वात्मसिद्धेर्विधातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।6।।

ज्योतिष्काणां जिनगाराः, असंख्याः सन्ति सौख्यदाः।
स्वात्मज्योतिः प्रयच्छन्तु, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।7।।

वैमानिकाः जिनागाराः, लक्षाश्चतुरशीतयः।
सहस्रं सप्तनवतिः, त्रयोविंशाश्च मंगलम्।।8।।

मंगलं श्रीमहावीरो, मंगलं गौतमो गणी।
जैनशासनमाचन्द्रं स्थेयात् कुर्याच्च मंगलम्।।9।।

मंगलं चैत्यभक्तिर्या, प्रथमा रचना मता।
गौतमस्वामिना भक्तिः, सर्वमंगलदायिका।।10।।

चतुर्थकाल-उत्पन्ना, गीर्वाण्यां प्रथमा कृतिः।
चैत्यभक्तिःस्तुतिश्चैषा, कुर्यान्नित्यं सुमंगलम्।।11।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

महावीर समवसरण पूजा

स्थापना –नरेन्द्र छंद –

धनपति निर्मित समवसरण में, महावीर प्रभु राजें।
स्वर्णिम आभा देह छवी को, देख सूर्य भी लाजें।।
अतः आप के श्रीचरणों में, हुए समर्पित भविजन।
अन्तर अगणित गुणमणि प्रभु का, करूँ यहाँ आह्वानन।।1।।

ॐ ह्रीं अन्तरंग-अनन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्वित-श्रीमहावीरजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अन्तरंग-अनन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्वित-श्रीमहावीरजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अन्तरंग-अनन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्वित-श्रीमहावीरजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –गीताछंद –

हे नाथ! जग में जन्म व्याधी, बहुत ही दुःख दे रही।
अब मेट दीजे इसलिए, त्रयधार दे पूजूँ यहीं।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।1।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का, संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, चर्चूं सुगंधित गंध है।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।2।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के बहु, खंड खंड हुए यहाँ।
कर दो अखंडित ज्ञान तंदुल, पुँज से पूजूँ यहाँ।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।3।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्वजेता, आप ही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! सब जग अन्न खाया, भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूख व्याधी मेट दो, इस हेतु चरु अर्पूं यहीं।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।5।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न दीपक से कभी, मन का अंधेरा न भगा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही, ज्ञान का सूरज उगा।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।6।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे, नष्ट हों यह युक्ति दो।
मैं धूप खेवूँ अग्नि में, ये कर्मबैरी भस्म हों।।

महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।7।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल, बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिए, फल सरस तुम अर्पण किया।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! निज के रत्नत्रय, अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ्य हैं।
मुझको दिलावो शीघ्र ही, इस हेतु अर्घ्य समर्प्य है।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।9।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

वीर प्रभू पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम स्वाद, तिहुँ जग में भी शांति हो।।10।।

शान्तये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
भरे सौख्य भंडार, रोग शोक संकट टलें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य-गीताछंद –

सिद्धार्थनृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुये।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण आ गये।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, निज में परम आनंद लिये।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथी, संसार से निस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आन कर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि से महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, संसार सागर से तिरें।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावणवदी एकम तिथी, गौतम मुनी गणधर बने।
तब दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित उन्हें।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाणलक्ष्मी वरण कर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, तुम पास में आके बसें।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद –

महावीर प्रभू की जन्मभूमि, कुंडलपुरि इंद्रों से वंदित।
चारण ऋषि संजय विजय मुनी ने, सन्मति नाम रखा गुणभृत।।
संगमसुर ने महावीर नाम से, जहां वीर के गुण गाये।
मुनिगणनुत ऐसी नगरी की, पूजा करते हम हरषायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर-गर्भजन्मतपोभूमिकुण्डलपुर्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ केवलज्ञान जृंभिका में, पुनि राजगृही विपुलाचल पर।
प्रभु समवसरण में छ्यासठ दिन के, बाद दिव्यध्वनि हुई प्रगट।।
गौतम गणधर ने द्वादशांग, रचना कर जग उपकार किया।
जिस अंशरूप जिनवाणी ने, जन-जन का मार्ग प्रशस्त किया।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः केवलज्ञानभूमिजृंभिका-प्रथमदेशनास्थलराजगृही-विपुलाचलपर्वताभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुरि में जल सरवर में बहु, कमल खिलें अति सुरभि लिये।
उस मध्य शिलामणिमयी उपरि से, महावीर प्रभु मोक्ष गये।।
इन्द्रों ने चरण चिन्ह रचकर, पूजा की दीपावली किया।
निर्वाणभूमि को जजते ही, मैंने भी आतमशुद्ध किया।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः निर्वाणभूमिपावापुर्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

जो पंचकल्याणक को जजते, वे सर्व कल्याणक पाते हैं।
प्रभु कल्याणकभूमी पूजत, अतिशायी पुण्य कमाते हैं।।
इन तीर्थों की पूजा भक्ती, स्वात्मा को तीर्थ बनाती है।
मैं भी पूजूँ अतिश्रद्धा से, मेरा मन कमल खिलाती है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः पंचकल्याणकतत्पवित्रभूमिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं समवसरणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।
(पीले पुष्प, सुगंधित पुष्प या लवंग से 108 बार)

जयमाला

दोहा– **चिन्मय चिंतामणि प्रभो! गुण अनंत की खान।**
समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय तीर्थंकर महावीर, तुम धर्मचक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुख वीर्य चतुष्टय भर्ता हो।।
जय जय अनंत गुण के धारी, प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचता है त्रिभुवन मनहारी।।2।।

प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।
यह इन्द्र नीलमणि रचित गोल, आकार बना गुणमणिमाली।।
सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।
नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े, चढ़ जाते सब अतिशायि घनी।।3।।

पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
कहिं पद्मराग कहिं मरकतमणि, कहिं इन्द्रनीलमणि से मनहर।।
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊँचे।
ये बारह योजन से दिखते, जिनवर से द्विदश गुणे ऊँचे।।4।।

इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा, उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से, मानो मान गलित करते।।
इस समवसरण में चार कोट, अरु पांच वेदिकायें ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि, फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची।।5।।

इस धूलिसाल अभ्यंतर में है, भूमि चैत्यप्रासाद प्रथम।
एकेक जैन मंदिर अंतर से, पांच पांच प्रासाद सुगम।।
चारों गलियों में उभय तरफ, दो दोय नाट्यशालाएं हैं।
अभिनय करतीं जिनगुण गातीं, सुर भवनवासि कन्यायें हैं।।6।।

फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची, गोपुर द्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी, ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा।।
फिर आगे खाई स्वच्छ नीर, से भरी दूसरी भूमी है।
फूले कुवलय कमलों से युत, हंसों के कलरव की ध्वनि है।।7।।

फिर दूजी वेदी के आगे, तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले, जो पुष्पवृष्टि करते मनहर।।
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुर द्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूप घटों युत, में प्रवेश करती जनता।।8।।

आगे उद्यान भूमि चौथी, चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तपर्ण, चंपक अरु आम्र तरू के हैं।।
प्रत्येक दिशा में एक-एक, तरु चैत्य वृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिन प्रतिमा प्रातिहार्ययुत, चार-चार मणिमय दीखें।।9।।

इसके आगे वेदी सुन्दर, फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा, गोपुर द्वारों से युत शोभे।।
फिर कल्पवृक्ष भूमी छट्ठी, दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों हैं, सिद्धों की प्रतिमा उनमें।।10।।

चौथी वेदी के बाद भवन, भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव नव स्तूप रत्न निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद।।
परकोटा स्फटिकमयी चौथा, मरकत मणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्रीमंडप भूमी, बारह कोठों से जनमनहर।।11।।

फिर पंचम वेदी के आगे, त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश पर, धर्मचक्र चारों दिश हैं।।
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज, नवनिधि मंगल द्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी पर, जिनवर दर्शन पाप हरें।।12।।

जय जय जिनवर सिंहासन पर, चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनि, सुनकर सब भविजन तृप्त भये।।
सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो पूजें ध्यावें गुण गावें, कैवल्य ज्ञानमति प्राप्त करें।।13।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा– चतुर्मुखी ब्रह्मा तुम्हीं, ज्ञान व्याप्त जग विष्णु।
देवों के भी देव हो, महादेव अरि जिष्णु।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्री चैत्यभक्ति पूजा

अथ स्थापना (मुक्तक छंद)

'जयति भगवान्' उच्चारण किया गौतमगणी गुरु ने।
प्रभू महावीर के दर्शन किया जब इन्द्रभूति ने।
उसी क्षण मान विरहित हो समर्पित हो बने मुनि वो।
प्रभू की दिव्यध्वनि प्रगटी बने गणधर प्रथम ही वो।।1।।

–दोहा–

प्रभु की स्तुति में रचा, चैत्यभक्ति अमलान।
सर्व स्तोत्रों में प्रथम, महास्तोत्र प्रधान।।2।।

इसकी पूजा भक्ति से, पाऊं अनुपम सौख्य।
सन्मति जिनवर भक्त को, निजपद मिले मनोज्ञ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृतश्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृतश्रीमहावीरतीर्थंकरवंदनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृतश्रीमहावीरतीर्थंकरवंदनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

तृषा चाह की है बुझी ना कभी भी।
इसी हेतु से नीर लाया अभी ही।।
जजूँ चैत्यभक्ती महा स्तवन को।
मिटाऊँ स्वयं के जनम और मरण को।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

महाताप संसार में मोह का है।
इसी हेतु से पीत चंदन घिसा है।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय संसारतापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ सौख्य मेरा क्षणिक नाशवंता।
इसी हेतु से शालि को धोय संता।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति-महास्तोत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोभू जगत में सभी को भ्रमावे।
इसी हेतु से पुष्प चरणों चढ़ावें।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग सबसे बड़ा है जगत में।
इसी हेतु नैवेद्य लाया सरस मैं।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाघोर अंधेर अज्ञान का है।
इसी हेतु से दीप लौ जगमगा है।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महादुष्ट आठों करम संग लागे।
इसी हेतु से धूप खेऊँ यहाँ पे।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववाञ्छीत फल हेतु घूमा अभी तक।
फलों को इसी हेतु अर्पूं प्रभू अब।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महा अर्घ्य ले चैत्यभक्ती जजूं मैं।
महामोह के फंद से झट छुटूँ मैं।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-श्रीमहावीरतीर्थंकरवन्दनास्तुतिस्वरूपचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौबोल छंद–

(तर्ज–धन्य हस्तिनापुर की नगरी.....)

धन्य आज का दिवस धन्य ये, स्तवन अर्चना बेला है।
धन्य जन्म है सभी जनों का, लगा भक्त का मेला है।।
कंचन झारी में गंगा जल, प्रासुक शीतल मीठा है।
प्रभु चरणों में धारा देते, मिलता सौख्य अनूठा है।।
इसी शांतिधारा करने से, तीनों जग में शांती हो।
मुझको ऐसी शांति मिले भी, फिर ना कभी अशांती हो।।
प्रभो! आपकी दयादृष्टि से, मिटे जगत का मेला है।
धन्य आज का दिवस धन्य ये, स्तवन अर्चना बेला है।।10।।

शांतये शांतिधारा।

धन्य आज का दिवस धन्य ये, स्तवन अर्चना बेला है।
धन्य जनम है सभी जनों का, लगा भक्त का मेला है।।
कमल केतकी जुही चमेली, सुरभित पुष्प चुनाये हैं।
जिनवर चरण कमल में, पुष्पांजली चढ़ाने आये हैं।।
पुष्पांजलि से धन सुख संपति, संतति वृद्धि समृद्धी हो।
जनम जनम के क्लेश दूर हों, नवनिधि रिद्धी सिद्धी हो।।
नाथ! आपकी दयादृष्टि बिन, बहुत दुखों को झेला है।
धन्य आजा का दिवस धन्य ये, स्तवन अर्चना बेला है।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(35 अर्घ्य)

–दोहा–

चैत्यभक्ति स्तवन में, गुणमणि नंतानंत।
भक्ति भाव से मैं जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृंभिता-
वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ ।
कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताःपरस्परवैरिणो
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः।।1।।

पद्यानुवाद

जय हे भगवन् ! चरण कमल तव, कनक कमल पर करें विहार।
इन्द्रमुकुट की कांति प्रभा से, चुंबित शोभें अति सुखकार।।
जातविरोधी कलुषमना, क्रुध मान सहित जन्तूगण भी।
ऐसे तव पद का आश्रय ले, प्रेम भाव को धरें सभी।।1।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामि-श्रीविहारमाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृत-चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।।

तदनु जयति श्रेयान् धर्मः प्रवृद्धमहोदयः
कुगति-विपथ-क्लेशाद्योऽसौ विपाशयति प्रजाः।
परिणतनयस्याङ्गीभावाद्विवित्तविकल्पितं
भवतु भवतस्त्रातृ त्रेधा जिनेन्द्रवचोऽमृतम्।।2।।

जय हो श्रेयस्कर धर्मामृत, वृद्धिंगत महिमाशाली।
कुगति कुपथ से प्राणीगण को, निकालकर दे सुख भारी।।
नय को मुख्य गौण करने से, बहुत भेदयुत सुखदाता।
ऐसे जिनवचनामृतमय, हे धर्म! करो जग से रक्षा।।2।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिश्रेयस्करधर्ममाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृतचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।।

तदनु जयताज्जैनी वित्तिः प्रभंगतरंगिणी।
प्रभवविगमध्रौव्यद्रव्यस्वभावविभाविनी।।
निरुपमसुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलं।
विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमव्ययम्।।3।।

जय हो जैनी वाणी जग में, सप्तभंगमय गंगा है।
व्यय उत्पाद ध्रौव्ययुत द्रव्यों, के स्वभाव को प्रगट करे।।
अनुपम शिवसुख द्वार खोलती, अव्यय सुख को देती है।
विघ्न रहित अरु कर्म धूलि से, रहित मोक्ष को देती है।।3।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।3।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिजैनीवाणीमाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृतचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः।
सर्वजगद्वन्द्येभ्यो नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः।।4।।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधुगण सुरवंदित।
त्रिभुवन वंदित पंच परमगुरु, नमोऽस्तु तुमको मम संतत।।4।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतपंचपरमेष्ठिनमस्कारसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदाहतरजोभ्यः।
विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः ।।5।।

मोहारि के घातक द्वयरज, आवरणों से रहित जिनेश।
विघ्न-रहस विरहित पूजा के, योग्य अर्हत को नमूँ हमेश।।5।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतार्हन्नमस्कारसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं।
शुभधामनि धातारं वन्दे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम्।।6।।

क्षमादि उत्तम गुणगण साधक, सकल लोक हित हेतु महान्।
शुभ शिवधाम धरे ले जाकर, जिनवर धर्म नमूँ सुख खान।।6।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनधर्मवन्दनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैकज्योतिरमितगमयोगि।
सांगोपांगमजेयं जैनं वचनं सदा वन्दे।।7।।

मिथ्याज्ञान तमोवृत जग में, ज्योतिर्मय अनुपम भास्कर।
अंगपूर्वमय विजयशील, जिनवचन नमूँ मैं शिर नत कर।।7।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनागमवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविश्वचैत्यानि।
त्रिजगदभिवन्दितानां वन्दे त्रेधा जिनेन्द्राणां।।8।।

भवनवासि व्यन्तर ज्योतिष, वैमानिक में नरलोक में ये।
जिनभवनों की त्रिभुवन वंदित, जिनप्रतिमा को वंदूँ मैं।।8।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनचैत्यवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यर्च्यतीर्थकर्तृणाम्।
वन्दे भवाग्निशान्त्यै विभवानामालयालीस्ताः।।9।।

भुवनत्रय में जितने जिनगृह, भवविरहित तीर्थंकर के।
भवाग्नि शांति हेतु नमूँ मैं, त्रिभुवनपति से अर्चित ये।।9।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनचैत्यालयवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

इति पंच महापुरुषाः प्रणुता जिनधर्म-वचन-चैत्यानि।
चैत्यालयाश्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टां।।10।।

इस विध प्रणुत पंचपरमेष्ठी, श्री जिनधर्म जिनागम को।
विमल चैत्य चैत्यालय वंदूँ, बुधजन इष्ट बोधि मम दो।।10।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतनवदेववन्दनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मन्दिरेषु।
मनुजामरपूजितानि वंदे प्रतिबिम्बानि जगत्त्रये जिनानाम्।।11।।

द्युतिकर जिनगृह में अकृत्रिम, कृत्रिम अप्रमेय द्युतिमान।
नर सुर पूजित भुवनत्रय के, सब जिन बिंब नमूँ गुणखान।।11।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतत्रैलोक्यसंबंधि-अकृत्रिमकृत्रिमजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

द्युतिमंडलभासुराङ्गयष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानाम्।
भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपुषा प्राञ्जलिरस्मि वन्दमानः।।12।।

द्युतिमंडल भासुर तनु शोभित, जिनवर प्रतिमा अप्रतिम हैं।
जग में वैभव हेतु उन्हें, वंदूँ अंजलिकर शिर नत मैं।।12।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतसर्व-अप्रतिमजिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्य-भक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

विगतायुधविक्रियाविभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणाम्।
प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कांत्याप्रतिमाः कल्मषशान्तयेऽभिवन्दे।।13।।

आयुध विक्रिय भूषा विरहित, जिनगृह में प्रतिमा प्राकृत।
कांती से अनुपम हैं कल्मष, शांति हेतु मैं नमूँ सतत।।13।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतायुधाभरणवर्जितप्रकृतिरूपजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

कथयंति कषायमुक्तिलक्ष्मीं परया शान्ततया भवान्तकानाम्।
प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमंति प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम्।।14।।

परम शांति से कषायमुक्ती, को कहती मनहर अभिरूप।
भव के अंतक जिन की प्रतिमा, प्रणमूँ मन विशुद्धि के हेतु।।14।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-परमशांतमुद्रायुतसर्वजिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

यदिदं मम सिद्धभक्तिनीतं सुकृतं दुष्कृतवर्त्मरोधि तेन।
पटुना जिनधर्म एव भक्तिर्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे।।15।।

दुष्कृतपथ रोधक मम सिद्ध-भक्ति से हुआ पुण्य जो भी।
भव-भव में जिनधर्म हि में, दृढ़ भक्ति रहे फल मिले यही।।15।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-भवभवजिनधर्मभक्तिफलयाचनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसम्पदाम् ।
कीर्तयिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये।।16।।

सब पदार्थवित् दर्श ज्ञान-सम्पत् युत अर्हत् की प्रतिमा।
यथा बुद्धि मनशुद्धि हेतु, गुण कीर्तन करूँ अतुल महिमा।।16।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अर्हद्बिम्बकीर्तनसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

श्रीमद्भावनवासस्थाः स्वयंभासुरमूर्तयः।
वंदिता नो विधेयासुः प्रतिमाः परमां गतिम् ।।17।।

श्रीमद् भवनवासि के गृह में, भासुर जिनमूर्ति स्वयमेव।
परम सिद्धगति करें हमारी, वंदूँ उन्हें करूँ नित सेव।।17।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-भवनवासिगृहजिनालयजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

यावन्ति सन्ति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च।
तानि सर्वाणि चैत्यानि वन्दे भूयांसि भूतये।।18।।

इस जग में जितनी प्रतिमा हैं, कृत्रिम अकृत्रिम सबको।
मैं वंदूँ शिव वैभव हेतु, सब जिनचैत्य जिनालय को।।18।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतमध्यलोकसंबंधि-सर्व-अकृत्रिमकृत्रिमजिनप्रतिमा-वंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ये व्यन्तरविमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः।
ते च संख्यामतिक्रान्ताः सन्तु नो दोषविच्छिदे।।19।।

व्यंतर के विमान में जिनगृह, उनमें अकृत्रिम प्रतिमा।
संख्यातीत कही हैं वंदूँ, दोष नाश के हेतु सदा।।19।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-व्यंतरदेवगृहासंख्यातजिनालयजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ज्योतिषामथ लोकस्य भूतयेऽद्भुतसम्पदः।
गृहाः स्वयंभुवः सन्ति विमानेषु नमामि तान्।।20।।

ज्योतिष देवों के विमान में, अद्भुत संपत्युत जिनगेह।
स्वयंभुवा प्रतिमा भी अगणित, उन्हें नमूँ निज वैभव हेतु।।20।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-ज्योतिर्वासिदेवविमानसंबंधि-असंख्यातजिनालय-जिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

वन्दे सुरतिरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम्।
याः क्रमेणैव सेवन्ते तदर्चाः सिद्धिलब्धये।।21।।

सुरपति के नत मुकुटमणि-प्रभ से अभिषेक हुआ जिनका।
वैमानिक सुर सेवित प्रतिमा, सिद्धि हेतु मैं नमूँ सदा।।21।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-वैमानिकदेवसंबंधिसर्वजिनालयजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

इति स्तुतिपथातीतश्रीभृतामर्हतां मम।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रवनिरोधिनी।।22।।

इस विध स्तुति पथातीत, अन्तर बाहिर श्रीयुत अर्हन्।
चैत्यों के संकीर्तन से मम, सर्वास्रव का हो रोधन।।22।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-सर्वजिनप्रतिमास्तुतिफलसर्वास्रवसंवरयाचना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरित-
प्रक्षालनैककारणमतिलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम्।।23।।

अर्हद्देव महानद उत्तम-तीर्थ अलौकिक हैं जग में।
त्रिभुवन भविजन तीर्थस्नान से, पापों का क्षालन करते।।23।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामीकथित-अर्हन्महानदीसर्वोत्तमतीर्थमध्यस्नानकारक-त्रिभुवनभव्यजनपापमलप्रक्षालनकारणसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

लोकालोकसुतत्त्वप्रत्यवबोधनसमर्थदिव्यज्ञान-
प्रत्यहवहत्प्रवाहं व्रतशीलामलविशालकूलद्वितयम्।।24।।

लोकालोक सुतत्त्व प्रकाशक, दिव्यज्ञान जल नित बहता।
शील रु सद्व्रत विशाल निर्मल, दो तट से शोभित दिखता।।24।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-दिव्यज्ञानजलव्रतशीलकूलयुत-अर्हन्महातीर्थ-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

शुक्लध्यानस्तिमितस्थितराजद्राजहंसराजितमसकृत्।
स्वाध्यायमंद्रघोषं नानागुणसमितिगुप्ति-सिकतासुभगम्।।25।।

शुक्लध्यानमय राजहंस, स्थिर राजत है इस नद में।
मंद्रघोष स्वाध्याय विविधगुण, समिति गुप्ति बालू चमके।।25।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-मुनिगणस्वाध्यायघोष-समितिगुप्त्यादिगुणसिक-तायुत-अर्हन्महातीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

क्षान्त्यावर्तसहस्रं सर्वदया -विकचकुसुमविलसल्लतिकम्
दुःसहषरीषहाख्यद्ध्वततररंगत्तरंगभंगुरनिकरम् ।।26।।

क्षमादि हैं आवर्त सहस्रों, सर्वदयामय कुसुम खिले।
लता शोभती दुःसह परीषह, भंग तरंगित हैं लहरें।।26।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथितक्षमादि-आवर्त-सर्वदयापुष्प-परीषहतरंगसहित-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

व्यपगतकषायफेनं रागद्वेषादिदोष-शैवलरहितम्।
अत्यस्तमोह-कर्दममतिदूरनिरस्तमरण-मकरप्रकरम्।।27।।

रहित कषाय फेन से राग-द्वेष आदि शैवाल रहित।
रहित मोह कीचड़ से मरणादिक जलचर मकरादि रहित।।27।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-कषायमोहमरणादि-फेनशैवालमकरादिजंतु-रहित-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोद्रेकितनिर्घोष-विविधविहगध्वानम्।
विविधतपोनिधि-पुलिनं सास्रवसंवरणनिर्जरानिस्रवणम्।।28।।

ऋषि प्रधान के मधुर स्तव हों, विविध पक्षि के शब्द सदृश।
विविध साधुगण तट हैं आस्रव, रोध निर्जरा जल निःसृत।।28।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-ऋषिगणस्तुतिकृतमधुरध्वनितपोनिधिपुलि-नयुत-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

गणधरचक्रधरेन्द्रप्रभृतिमहाभव्यपुंडरीकैः पुरुषैः।
बहुभिः स्नातं भक्त्या कलिकलुषमलापकर्षणार्थममेयम्।।29।।

गणधर चक्री इन्द्र आदि जो, भव्य प्रवर बहु पुरुष प्रधान।
कलिमल कलुष दूर करने हित, भक्ति से यहाँ किया स्नान।।29।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-गणधरचक्रवर्तिइंद्रादिकृतस्नानसहित-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरितं दूरं।
व्यवहरतु परमपावनमनन्यजय्यस्वभावभावगभीरम्।।30।।

इस विध श्री अर्हंत महाप्रभु, महातीर्थ गणधर कहते।
भविजन पाप मैल क्षालन हित, इसमें अवगाहन करते।।
अति पावन यह तीर्थ अन्य से, अजेय अनुपम है गंभीर।
मैं स्नान हेतु उतरा हूँ, मम दुष्कृत मल करिये दूर।।30।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतस्नानफलयाचनायुत-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

अताम्रनयनोत्पलं सकलकोपवह्नेर्जयात्
कटाक्षशरमोक्षहीनमविकारतोद्रेकतः ।
विषादमदहानितः प्रहसितायमानं सदा
मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यन्तिकीम्।।31।।

क्रोधाग्नि को जीत लिया नहिं, नेत्र कमल लालिमा प्रभो!
नहिं विकार उद्रेक अतः प्रभु, दृष्टि कटाक्ष रहित तुम हो।।
मद विषाद से रहित अतः, स्मित मुख सदा रहे भगवन् ।
कहता है यह मंदहास्य तव, अंतःकरण शुद्धि पूरण।।31।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अताम्रनयनादिवीतरागतामंद-मंदमुस्कानमुख-कमलसहितमहावीरतीर्थंकरवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदया-
न्निरंबरमनोहरं प्रकृतिरूपनिर्दोषतः।
निरायुधसुनिर्भयं विगतहिंस्यहिंसाक्रमात्,
निरामिषसुतृप्तिमद्विविधवेदनानां क्षयात्।।32।।

रागोद्रेक रहित होने से, बिन आभूषण शोभित हो।
प्रकृति रूप निर्दोष तुम्हारा, प्रभु निर्वस्त्र मनोहर हो।।

हिंसा हिंस्य भावविरहित से, आयुध रहित सुनिर्भय हो।
विविध वेदना के क्षय से बिन-भोजन तृप्त सदा प्रभु हो।।32।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-वस्त्राभरणायुधभोजनविरहितप्रकृतिरूपमनोहर-मुद्रासहितमहावीरप्रभुवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

मितस्थितनखांगजं गतरजोमलस्पर्शनं
नवांबुरुहचंदनप्रतिमदिव्यगन्धोदयम् ।
रवीन्दुकुलिशादिदिव्यबहुलक्षणालंकृतं
दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम्।।33।।

वृद्धि रहित नख केश प्रभो! रजमल स्पर्श न हो तन को।
विकसित कमल सुचंदन सम है, दिव्य सुगंधित देह विभो!
रवि शशि वज्र दिव्य लक्षण से, शोभित तव शुभरूप महान।
कोटि सूर्य से अधिक चमक, फिर भी दर्शक को प्रिय सुखदान।।33।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-दिव्यसुगंधितदिव्यलक्षणसहस्रसूर्यप्रकाशाधिक-भासुरदेहयुतमहावीरप्रभुवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

हितार्थपरिपंथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः
कलंकितमना जनो यदभिवीक्ष्य शोशुध्यते।
सदाभिमुखमेव यज्जगति पश्यतां सर्वतः
शरद्विमलचन्द्रमंडलमिवोत्थितं दृश्यते।।34।।

मोहराग से दूषित हितपथ-द्वेषीजन के सुन उपदेश।
कलुषमना जन हुए जगत में, शुचि होते वे तुमको देख।।

अतिशय युत तव मुख दर्शक, जन को अपने सन्मुख दिखता।
शरद् विमल शशि मंडल सम, तव आस्य चन्द्र है उदित हुआ।।34।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-प्रबलमोहरागादिदूषितजनसमूह-अवलोकनमात्र-पावनकारणजिनमुखकमलवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामणि–
स्फुरत्किरणचुंबनीयचरणारविन्दद्वयम्।
पुनातु भगवज्जिनेन्द्र ! तव रूपमन्धीकृतं
जगत् सकलमन्यतीर्थगुरुरूपदोषोदयैः।।35।।

अमरेश्वर के नमस्कार से, मुकुट मणिप्रभ किरणों से।
चुम्बित चरण सरोरुह भगवन् ! तव शुभरूप मनोहर है।।
अन्य देव गुरु तीर्थ उपासक, सकल भुवन यह अन्ध समान।
उन सबको तव रूप पवित्र, करे अरु नेत्र करे अमलान।।35।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सब मंगल करतार।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूं, पाऊं निज सुख सार।।35।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अन्यतीर्थोपासनाभिरंधीकृत-सकलजगत्पावनया-चनाफलसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

पूर्णार्घ्य—आलोचना या अंचलिका

इच्छामि भंते ! चेइयभक्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं । अहलोय-तिरियलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेयाणि ताणि सव्वाणि तीसुवि लोएसु भवणवासिय-वाण-विंतर-जोइसिय-कप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि

णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

भगवन् ! चैत्यभक्ति अरु कायोत्सर्ग किया उसमें जो दोष।
उनकी आलोचन करने को, इच्छुक हूँ धर मन सन्तोष।।
अधो मध्य अरु ऊर्ध्वलोक में, अकृत्रिम कृत्रिम जिनचैत्य।
जितने भी हैं त्रिभुवन के, चउविध सुर करें भक्ति से सेव।।1।।

भवनवासि व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक सुर परिवार सहित।
दिव्य गंध सुम धूप चूर्ण से, दिव्य न्हवन करते नितप्रति।।
अर्चें पूजें वंदन करते, नमस्कार वे करें सतत।
मैं भी उन्हें यहीं पर अर्चूं, पूजूँ वंदूँ नमूँ सतत।।2।।

दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, होवे बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपति होवे।।3।।

दोहा– **चैत्यभक्ति की अर्चना, सर्व सौख्य दातार।**
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, पाऊं सौख्य अपार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-त्रैलोक्यसंबंधित्रैलोक्यजनपूजितसर्वकृत्रिमजिन-प्रतिमावंदनादिफलजिनगुणसंप्राप्तियाचनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शान्तये शांतिधारा, परिपुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत-चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

जयमाला

–शंभुछंद–

जय श्री तीर्थंकर महावीर, केवलज्ञानी अंतर्यामी।
जय जय श्री गौतम स्वामी गुरु, प्रभु के गणधर जग में नामी।।
जय जय श्री चैत्यभक्ति संस्तुति, सबसे पहली रचना मानी।
जय श्रावण कृष्णा एकम तिथि, प्रगटी प्रभु दिव्यध्वनी वाणी।।1।।

प्रभु श्री विहार में चरण कमल तल, स्वर्ण कमल सुरभित खिलते।
सब जात विरोधी प्राणीगण, आपस में प्रीती से मिलते।।
इस चैत्यभक्ति में वीरस्तव, नवदेवों की स्तुति रचना।
अर्हंत महानदि महातीर्थ, गागर में सागर का भरना।।2।।

जय जय अर्हंत देव जिनवर, जय जय छ्यालिस गुण के धारी।
जय समवसरण वैभव श्रीधर, जय जय अनंत गुण के धारी।।
जय जय जिनवर केवलज्ञानी, गणधर अनगार केवली सब।
जय गंधकुटी में दिव्यध्वनी, सुनते असंख्य सुर नर पशु सब।।3।।

इक सौ सत्तर जो कर्मभूमि, उनमें जिनवर होते रहते।
फिर कर्म अघाती भी हनकर, वे सिद्धिवधू वरते रहते।।
ये सिद्ध अनंतानंत हुए, हो रहे और भी होवेंगे।
जय जय सब सिद्धों की वे मुझ, सिद्धी में हेतू होवेंगे।।4।।

निज साम्य सुधारस आस्वादी, मुनिगण जहं नित्य विचरते हैं।
आचार्य प्रवर चउविध संघ के, नायक जहं मार्ग प्रवर्ते हैं।।
दीक्षा शिक्षा देकर शिष्यों पर, अनुग्रह निग्रह भी करते।
प्रायश्चित देकर शुद्ध करें, बालकवत् पोषण भी करते।।5।।

गुरु उपाध्याय मुनि अंग पूर्व, शास्त्रों का वाचन करते हैं।
चउविध संघों को यथायोग्य, श्रुत का अध्यापन करते हैं।।
मिथ्यात्व तिमिर से मार्ग भ्रष्ट, जन को सम्यक् पथ दिखलाते।
जो परम्परा से गुरुमुख से, पढ़ते वे निज निधि को पाते।।6।।

निज आत्म साधना में प्रवीण, अतिघोर तपस्या करते हैं।
वे साधू शिवमारग साधें, बहु ऋद्धि सिद्धि को वरते हैं।।
विक्रिया ऋद्धि चारण ऋद्धी, सर्वौषधि ऋद्धी धरते हैं।
अक्षीण महानस ऋद्धी से, सब जन को तर्पित करते हैं।।7।।

इन सब ही कर्मभूमियों में, जन्में ही मुनि बन सकते हैं।
फिर गगन गमन ऋद्धी बल से, सर्वत्र भ्रमण कर सकते हैं।।

वे ढाई द्वीप तक ही जाते, उससे बाहर नहिं जा सकते।
नर जन्म व मुक्ती मार्ग यहीं, यहाँ से ही सिद्धी पा सकते।।8।।

तीर्थंकर धर्मचक्रधारी, जिनधर्म प्रवर्तन करते हैं।
इन कर्मभूमियों में ही वे, शिवपथ का वर्तन करते हैं।।
जय जय इस जैनधर्म की जय, यह सार्वभौम है धर्म कहा।
सब प्राणिमात्र को अभयदान, देवे सब सुख की खान कहा।।9।।

तीर्थंकर के मुख से खिरती, वाणी सब जन कल्याणी है।
गणधर गुरु उसको धारण कर, रचते द्वादशांग जिनवाणी है।।
गुरु परम्परा से अब तक भी, यह सारभूत जिनवाणी है।
इसकी जो पूजा भक्ति करे, उनके भव-भव दुख हानी है।।10।।

त्रिभुवन में अकृत्रिम मंदिर, जिनकी हो सकती है गणना।
उनमें अकृत्रिम जिनप्रतिमा, उनकी मानी हैं जो गणना।।
नवसौ पचीस कोटि त्रेपन, अरु लाख सत्ताइस सहस कही।
नवसौ अड़तालिस जिनप्रतिमा, त्रिभुवन की मैं नित नमूँ सही।।11।।

व्यंतर ज्योतिष के असंख्यात, जिनगृह की जिनप्रतिमाएं हैं।
प्रति जिनगृह इक सौ आठ, एक सौ आठ रहें प्रतिमायें हैं।।
इन ढाई द्वीप दो समुद्र में, कृत्रिम जिनप्रतिमा अगणित हैं।
सुरपति चक्री हलधर आदिक, नर सुरकृत वंदित सुखप्रद हैं।।12।।

जो प्रतिमा प्रातिहार्य संयुत, अरु यक्ष यक्षिणी से युत हैं।
निज चिन्ह व मंगल द्रव्य सहित, वे अर्हंतों की प्रतिकृति हैं।।
सब प्रातिहार्य चिन्हादि रहित, प्रतिमा सिद्धों की कहलाती।
अथवा अकृत्रिम प्रतिमाएं, सब सिद्धों की मानी जाती।।13।।

आचार्य उपाध्याय साधू की, प्रतिमाएं कर्मभूमि में हैं।
कुछ पंचपरमेष्ठी नव देवों की, प्रतिमाएं भी निर्मित हैं।।
अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु पंच परमेष्ठी हैं।
जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा, जिनगृह सब मिल नव देव कहें।।14।।

इस जंबूद्वीप के अकृत्रिम, जिनमंदिर अट्ठत्तर ही हैं।
जिनमंदिर शाश्वत चार शतक, अट्ठावन मध्यलोक में हैं।।
ये सात करोड़ बहत्तर लख, जिनमंदिर भवनवासि के हैं।
चौरासी लाख सत्तानवे हजार तेइस वैमानिक के हैं।।15।।

अठ कोटि सुछप्पन लक्ष सत्तानवे, सहस चार सौ इक्यासी।
सब जिनगृह व्यंतर ज्योतिष के, उन संख्यातीत कही राशी।।
त्रिभुवन के ये शाश्वत मंदिर, उन सबका वंदन करते हैं।
नरपति सुरपति निर्मित जिनगृह, उन सबको भी नित नमते हैं।।16।।

इन ढाईद्वीपों से बाहर, बस शाश्वत जिनगृह जिनप्रतिमा।
नहिं पंच परमगुरु आदि वहाँ, नहिं शिवपथ नहिं नर गमन वहाँ।।
सब इंद्र इंद्राणी देव-देवियाँ, भक्ती से वहाँ जाते हैं।
वंदन पूजन अर्चन करके, अतिशायी पुण्य कमाते हैं।।17।।

फिर भी इन कर्मभूमियों में, जन्मे मानव सुकृतशाली।
जो रत्नत्रय का साधन कर, शिव प्राप्त करें महिमाशाली।।
तीर्थंकर आदि महापुरुषों, को सुरपति भी वंदन करते।
कब मिले मनुजभव तप धारें, शिव लहें भावना मन धरते।।18।।

जय जय अर्हंत सिद्ध सूरी, जय उपाध्याय साधूगण की।
जय जय जिनधर्म जिनागम की, जय जय जिनबिंब जिनालय की।।
जय त्रयकालिक नवदेवों की, जय चिन्मय ज्योति निरंजन की।
जय जय त्रैलोक्य अभयदायक, जय जय जय श्रीजिनशासन की।।19।।

–दोहा–

नमूँ चैत्यभक्ती सदा, मिले सर्व इष्टार्थ।
केवल ज्ञानमती सहित, फले मोक्ष पुरुषार्थ।।20।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत-श्री महावीरतीर्थंकरवन्दना-स्तुतिस्वरूपचैत्य-भक्तिमहास्तोत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेरछंद–

जो भव्य चैत्यभक्ति का विधान करेंगे।
वे नित्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य 'ज्ञानमती' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्षमहल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ३
श्री गौतमस्वामी पूजा

गीता छंद

गणपति गणीश गणेश गणनायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप आदि नाम प्रधान हैं।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम स्वामि गणधर को जजूँ।
स्थापना करके यहाँ सब कार्य में मंगल भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-नन्दीश्वर पूजन चाल

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे।
तुम चरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे।
तुम पद पूजा तत्काल, अंतर्ताप हरे।।श्री गौतम.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया।।श्री गौतम.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें।।श्री गौतम.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले।।श्री गौतम.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े।।श्री गौतम.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी सेव, उत्तम फल लाऊँ।
गणनाथ चरण युगपूज, वांछित फल पाऊँ।।श्री गौतम.।।8।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूँ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूँ।।श्री गौतम.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार करूँ।।श्री गौतम.।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर में।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूँ इक पल में।।श्री गौतम.।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने नमः (108 या 9 बार)।

जयमाला

–दोहा–

परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।
गाऊँ तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण।।1।।

–रोला छंद–

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवसरण में नामी।।
जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा।।2।।

इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा।।3।।

छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखठानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया।।4।।

मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूँ मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चहूँ मैं।।5।।

त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।

चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूँगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूँगा।।6।।

उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन ''जयतु भगवान्'' स्तुति रूप उचारा।।7।।

निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना।।
द्वादशांग मय ग्रंथ, गौतम गुरु ने कीने।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।8।।

वीर प्रभू निर्वाण, के दिन केवल पायो।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इन्द्र रचे हैं।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजे हैं।।9।।

इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में।
गणपति लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है।।10।।

गणधर पूजा सत्य, सर्वसंपदा देवें।
धन धान्यादिक पूर, मोक्ष संपदा देवें।।
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजे हैं।
''केवलज्ञान'' प्रकाश, हेतू आप भजे हैं।।11।।

–दोहा–

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूँ महान्।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण।।

–शेरछंद–

जो भव्य चैत्यभक्ति का विधान करेंगे।
वे नित्य नवों निधी से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य 'ज्ञानमती' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्षमहल में अनंत काल रहेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

महार्घ्य–अन्त्यमंगल

त्रैलोक्यं मंगलं कुर्यात्, मंगलं नवदेवताः।
मंगलं जिनचैत्यानि, मंगलं नवलब्धयः।।1।।

मंगलं भगवानर्हन् , मंगलं वृषभेश्वरः।
मंगलं सर्वतीर्थेशा, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।2।।

मंगलं पार्श्वनाथोऽर्हन्, त्रयोविंशो जिनेश्वरः।
मंगलं गर्भकल्याणं, वैशाखे द्वितयाऽसिते।।3।।

मंगलं भगवान् वीरो, महावीरोऽथ सन्मतिः।
वर्द्धमानोऽतिवीरश्च, नामानि पंच मंगलम्।।4।।

मंगलं गौतमस्वामी, वीरस्य प्रथमो गणी।
मंगलं वीरदिव्यागीः, चैत्यभक्तिश्च मंगलम्।।5।।

मंगलं प्रथमाचार्यो, गुरुः श्रीशांतिसागरः।
मंगलं पट्ट सूरिश्च, गुरूः श्री वीरसागरः।।6।।

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारकम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतनवदेवतास्तवनसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहा-स्तोत्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रशस्ति

–दोहा–

वीर अब्द पच्चीस सौ, ब्यालीस जग में मान्य।
मास असित वैशाख की, तिथी द्वितीया धन्य।।1।।

मांगीतुंगी तीर्थ पर, ऋषभदेव उद्यान।
चैत्यभक्ति की भक्ति से, किया पूर्ण सुविधान।।2।।

ऋषभदेव प्रतिमा यहाँ, इक सौ आठ फुट तुंग।
अतिशयकारी देव को, नमत पुण्य उत्तुंग।।3।।

पच्चीस सौ बाहत्तर[1], वर्ष पूर्व जग वंद्य।
श्रावण कृष्णा प्रतिपदा, श्री गौतम गुरु धन्य।।4।।

वीर प्रभू का दर्श कर, कहा 'जयति भगवान्!।
चैत्यभक्ति स्तुति रची, किया स्तवन महान्।।5।।

चतुर्थकालिक मान्य यह, चैत्यभक्ति अतिशायि।
श्री गौतमगणधर रचित, भविजन को सुखदायि।।6।।

वीरसागराचार्य हैं, दीक्षा गुरुवर वंद्य।
ज्ञानमती शुभ नाम दे, किया हमें भी धन्य।।7।।

शांतिसागराचार्य के, नमूं सभी आचार्य।
अनेकांतसागर सहित, सप्तम पट्टाचार्य।।8।।

जब तक श्री जिनधर्म है, जब तक साधु विहार।
गणिनी ज्ञानमती रचित, हो विधान सुखसार।।9।।

इति श्री चैत्यभक्तिविधानं संपूर्णम्।

1. वीर सं.-2542 में 30 और मिलाने से आज से 2572 वर्ष पहले चैत्यभक्ति की रचना श्रावण कृष्णा एकम को हुई है।

श्री चैत्यभक्ति महास्तोत्र व्रत

(श्री गौतमस्वामी कृत चैत्यभक्ति पर आधारित)

चतुर्थकाल में भगवान महावीर के समवसरण का दर्शन करते हुए गोतम गोत्रीय इन्द्रभूति का मान गलित हो गया और तत्क्षण ही सम्यग्दर्शन प्रगट हो गया। उसी क्षण प्रथम दर्शन में– भगवान के मुखकमल का प्रथम साक्षात्कार करते ही इन्द्रभूति ने **'जयति भगवान्'** का मुख उच्चारण करते हुए चैत्यभक्ति से स्तुति की है एवं प्रभु के चरणों में समर्पित होकर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर प्रथम गणधर बन गये हैं। अंतर्मुहूर्त में ही इन्हें मति, श्रुत, अवधि व मनःपर्यय ऐसे चार ज्ञान प्रगट हो गये हैं तथा सम्पूर्ण ऋद्धियाँ प्रगट हो गई हैं।

इनको दीक्षा लेते ही भगवान महावीर स्वामी की प्रथम दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को प्रगट हुई है। अतः यह **'चैत्यभक्ति'** नाम का स्तोत्र चतुर्थकालीन भगवान महावीर स्वामी के समवसरण में की गई रचना है अतः यह स्तोत्र **'चैत्यभक्ति महास्तोत्र'** है ये इन्द्रभूति गणधरदेव अपने गोत्र गोतम से **'गौतम स्वामी'** के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हैं। इनकी यह सर्वप्रथम रचना है। जिस दिन भगवान की दिव्यध्वनि राजगृही में विपुलाचल पर्वत पर खिरी थी, उसी दिन श्री गौतम स्वामी ने अंतर्मुहूर्त में 'द्वादशांग' की रचना की थी। यह द्वादशांग रचना गणधरदेव द्वारा ही की जाती है। यह इतनी विशाल है कि इसे लिपिबद्ध किया ही नहीं जा सकता है। प्रभु के समवसरण में गौतमस्वामी द्वारा कृत यह चैत्यभक्ति रचना अपूर्व-अद्भुत महिमापूर्ण है। इसमें 35 काव्य व अंत में अंचलिका है। अतः इस महास्तोत्र के व्रत में 36 व्रत करना है। इस व्रत में भगवान महावीर स्वामी के समवसरण का, नवदेवताओं का, अकृत्रिम-कृत्रिम जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं का एवं अर्हंतभगवानरूपी महातीर्थ का तथा भगवान महावीर की 'वीतराग छवि' का विस्तृत विवेचन है। इस व्रत को करने से सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि, सम्पूर्ण रोग, शोक, आधि आदि का विनाश एवं विद्या, बुद्धि आदि का विकास होगा। संसार के सभी अभ्युदयों को प्राप्तकर परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति भी होगी।

व्रतविधि– इस व्रत को श्रावण कृष्णा एकम् से प्रारंभ करना चाहिए अथवा कभी भी किसी भी अष्टमी-चतुर्दशी आदि को व्रत प्रारंभ कर सकते हैं। व्रत की उत्तम विधि उपवास करके भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक और पूजन करें

एवं चैत्यभक्ति की पूजा करें। मध्यम विधि में उपवास की शक्ति न होने से कुछ भी अल्पाहार एक बार लेवें अथवा जघन्य विधि में एक बार शुद्ध भोजन करके भी व्रत कर सकते हैं।

व्रत के दिन **'चैत्यभक्ति'** का पाठ अवश्य करें। संस्कृत अथवा हिन्दी पद्यानुवाद भी पढ़ सकते हैं।

व्रत के दिन समुच्चय मंत्र की एक माला करें व प्रत्येक व्रतों के मंत्र की क्रम से एक-एक मंत्र की जाप्य करें। सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले तंदुलों से अथवा मोती, मूंगा, स्फटिक आदि की माला से जाप्य करें। अपनी इच्छानुसार हाथ की अंगुलियों से भी जाप्य कर सकते हैं। इस व्रत में चैत्यभक्ति के 35 श्लोक के एवं अंतिम अंचलिका के ऐसे 36 व्रत हैं। व्रत के दिन चैत्यभक्ति संस्कृत या हिन्दी पद्यानुवाद पढ़ना चाहिए। यह व्रत हमारे व आपके जीवन को मंगलमय बनाकर सफल करे, यही मंगलभावना है।

श्री चैत्यभक्ति महास्तोत्र व्रत के मंत्र

समुच्चय मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत– चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(प्रत्येक व्रत के 36 मंत्र)

(1) ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिश्रीविहारमाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृत-चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(2) ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिश्रेयस्करधर्ममाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामि-कृतचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(3) ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिजैनीवाणीमाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृत-चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(4) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतपंचपरमेष्ठिनमस्कारसमन्विताय श्रीचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय नमः।

(5) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतार्हन्नमस्कारसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(6) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनधर्मवन्दनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय नमः।

(7) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनागमवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(8) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनचैत्यवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(9) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनचैत्यालयवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय नमः।

(10) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतनवदेववन्दनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय नमः।

(11) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतत्रैलोक्यसंबंधि-अकृत्रिमकृत्रिमजिनप्रतिमा-वंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(12) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतसर्व-अप्रतिमजिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(13) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतायुधाभरणवर्जितप्रकृतिरूपजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(14) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-परमशांतमुद्रायुतसर्वजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(15) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-भवभवजिनधर्मभक्तिफलयाचनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(16) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अर्हद्बिम्बकीर्तनसमन्विताय श्रीचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय नमः।

(17) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-भवनवासिगृहजिनालयजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(18) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतमध्यलोकसंबंधिसर्व-अकृत्रिमकृत्रिम-जिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(19) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-व्यंतरदेवगृहासंख्यातजिनालय-जिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(20) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-ज्योतिर्वासिदेवविमानसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(21) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-वैमानिकदेवसंबंधिसर्वजिनालयजिनप्रतिमा-वंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(22) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-सर्वजिनप्रतिमास्तुतिफलसर्वास्रवसंवरयाचना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(23) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामीकथित-अर्हन्महानदीसर्वोत्तमतीर्थमध्यस्नानकार-कत्रिभुवनभव्यजनपापमलप्रक्षालनकारण-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(24) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथितदिव्यज्ञानजलव्रतशीलकूलयुत-अर्हन्-महातीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(25) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-मुनिगणस्वाध्यायघोष-समितिगुप्त्यादि-गुणसिकतायुत-अर्हन्महातीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(26) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथितक्षमादि-आवर्त-सर्वदयापुष्प-परीषहतरंग-सहित-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(27) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-कषायमोहमरणादि-फेनशैवालमकरादिजंतु-रहित-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(28) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-ऋषिगणस्तुतिकृतमधुर-ध्वनितपोनिधि-पुलिनयुत-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(29) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-गणधरचक्रवर्ति-इंद्रादिकृतस्नानसहित-अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(30) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतस्नानफलयाचनायुत-अर्हन्महानदीतीर्थ-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(31) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अताम्रनयनादिवीतरागतामंद-मंदमुस्कान-मुखकमलसहितमहावीरतीर्थंकरवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(32) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-वस्त्राभरणायुधभोजनविरहितप्रकृतिरूप-मनोहरमुद्रासहितमहावीरप्रभुवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(33) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-दिव्यसुगंधितदिव्यलक्षणसहस्रसूर्य-प्रकाशाधिकभासुरदेहयुतमहावीरप्रभुवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(34) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-प्रबलमोहरागादिदूषितजनसमूह-अवलोकन-मात्रपावनकारणजिनमुखकमल-वंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

(35) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अन्यतीर्थोपासनाभिरंधीकृत-सकलजगत्-पावनयाचनाफलसमन्विताय श्रीचैत्यभक्ति-महास्तोत्राय नमः।

(36) ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-त्रैलोक्यसंबंधित्रैलोक्यजनपूजितसर्व-कृत्रिमाकृत्रिमजिनप्रतिमावंदनादिफलजिनगुण-संप्राप्तियाचनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय नमः।

श्री गौतम गणधर चालीसा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–दोहा–

वंदूँ वीर जिनेन्द्र को, मन वच तन कर शुद्ध।
उनके गणधर शिष्य को, नमूँ हृदय कर शुद्ध।।1।।
श्री गौतम गणधर हुए, गणनायक मुनिराज।
जिनकी वाणी सुन बने, अन्य बहुत मुनिराज।।2।।
उन गणधर भगवान का, चालीसा सुखकार।
है सम्यक् श्रुतज्ञान का, यह भी इक आधार।।3।।

–चौपाई–

जय हो वीतराग प्रभु वाणी, वीर दिव्यध्वनि जगकल्याणी।।1।।
बने नाथ जब केवलज्ञानी, समवसरण रचना के स्वामी।।2।।
दिव्यध्वनी जब खिरी नहीं थी, इन्द्र के मन तब युक्ति हुई थी।।3।।
सोचा प्रभु को शिष्य चाहिए, गणधर पद के योग्य चाहिए।।4।।
तभी दिव्यध्वनि खिर सकती है, सारी जनता सुन सकती है।।5।।
इन्द्र ने अवधिज्ञान से जाना, एक महाज्ञानी पहचाना।।6।।
सुनो उसी ज्ञानी की गाथा, जो कैसे सम्यक्त्व है पाता।।7।।
मगध देश में ब्राह्मण नगरी, रहते थे वहाँ इक दम्पत्ती।।8।।
था शाण्डिल्य नाम पण्डित का, स्थंडिला नाम पत्नी का।।9।।
गौतम गार्ग्य पुत्रद्वय जनमे, सर्वकला में पारंगत वे।।10।।
दूजी भार्या नाम केशरी, वह भार्गव सुत की जननी थी।।11।।
इस प्रकार त्रय पुत्र को पाकर, थे शाण्डिल्य प्रसन्न गुणाकर।।12।।
इनके तीन नाम थे दूजे, जिनसे तीनों ही प्रसिद्ध थे।।13।।
इन्द्रभूति गौतम को जानो, गार्ग्य को अग्निभूति तुम मानो।।14।।
भार्गव वायुभूति कहलाया, तीनों में था मान समाया।।15।।
पाँच शतक शिष्यों का स्वामी, इन्द्रभूति गौतम जगनामी।।16।।
उनके पास इन्द्र ने जाकर, पूछा एक प्रश्न का उत्तर।।17।।
वृद्ध वेषधारी का प्रश्न सुन, बोल पड़े आकस्मिक गौतम।।18।।
तू मुझको निज गुरू के पास में, ले चल वहीं पर करूँगा वाद मैं।।19।।
इन्द्र को तो यह इन्तजार था, प्रभु ढिग चलने को तैयार था।।20।।
चले इन्द्र के साथ में गौतम, अपने पाँच शतक शिष्यों संग।।21।।
राजगृही विपुलाचल ऊपर, राज रहा था समवसरण प्रभु।।22।।
वहाँ पहुँचते ही गौतम की, सारी मिथ्याभ्रांति हटी थी।।23।।

तत्क्षण सम्यग्दर्शन पाया, वीर प्रभू को शीश नमाया।।24।।
बन गये नग्न दिगम्बर मुनिवर, तत्क्षण बने प्रभू के गणधर।।25।।
हो गये चार ज्ञान के धारी, जय हे भगवन् स्तुती उचारी।।26।।
वीर की दिव्यध्वनि तत्क्षण ही, खिर गई गणधर के मिलते ही।।27।।
इन्द्रभूति गौतम गणधर ने, दिव्यध्वनि हृदयंगम करके।।28।।
द्वादशांग रच दिया शीघ्र ही, उसका ही है अंश आज भी।।29।।
श्रावण कृष्णा एकम तिथि थी, गणधर पद धारण की शुभ थी।।30।।
महावीर शासन का शुभ दिन, कृतयुग का माना है प्रथम दिन।।31।।
ग्रंथ आज उपलब्ध हैं जो भी, प्रभु वाणी के अंश हैं वो भी।।32।।
है साक्षात भी गौतम वाणी, सुनो भव्यजन जगकल्याणी।।33।।
कहें ''सुदं मे आउस्संतो'', तुम भी धारो आयुष्मन्तों।।34।।
दश अध्यायों में विभक्त है, ज्ञान प्राप्ति हेतू सशक्त है।।35।।
गणिनी ज्ञानमती माताजी, गणधरवाणी संग्रहकर्त्री।।36।।
उनने गणधर वर्ष चलाया, जिन आगम का सार बताया।।37।।
सभी भव्यजन पढ़ो पढ़ाओ, गणधर वाणी को अपनाओ।।38।।
गौतम गणधर पूजन कर लो, नाम मंत्र भी उनका जप लो।।39।।
जय जय बोलो प्रभु पद नम लो, सार्थक मानव जीवन कर लो।।40।।

–शंभु छंद–

यह गौतम गणधर चालीसा, चालिस दिन तक नितप्रति पढ़ना।
हे आयुष्मन्तों ! गणधर की, ऋद्धी का फल सार्थक वरना।।
जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख की प्राप्ती करना।
फिर परम्परा से गणधर पद को, पाकर शाश्वत सुख भरना।।1।।

गणिनी माता श्री ज्ञानमती, जी की शिष्या चन्दनामती।
श्री गौतमगणधर गणनायक, की स्तुति में यह रची कृती।।
श्री वीर संवत् पच्चीस शतक, आषाढ़ शुक्ल षष्ठी की तिथी।
प्रभु वीर गर्भकल्याणक दिन, गणधर पद अर्पण किया कृती।।2।।

भगवान वीर मंगलमय हों, गौतम गणधर मंगलकारी।
श्री कुन्दकुन्द आचार्य तथा, जिनधर्म सदा मंगलकारी।।
महावीर प्रभू का जिनशासन, जब तक जग में जयशील रहे।
उन शिष्य प्रभू गौतम स्वामी, की वाणी भी जयशील रहे।।3।।

श्री चैत्यभक्ति विधान की मंगल आरती

रचयित्री – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

मैं तो आरती उतारूँ रे, श्री चैत्यभक्ति की,
जय जय महावीर प्रभो जय जय जय-2।।टेक.।।
वीर प्रभु के समवसरण में, पधारे गौतम जब। ''पधारे गौतम जब...
हुआ मान गलित उनका, दीक्षा धारी तब। दीक्षा धारी तब.....
जयति भगवान कहा, मन में श्रद्धान महा, जय जय उचारी रे
हाँ ....प्रभु की जय जय उचारी रे।। मैं तो आरती...।।1।।
उसी स्तुति का नाम चैत्यभक्ति, पड़ गया उस क्षण से।। पड़ गया...
तीनों लोकों के जिनवर की भक्ति, हो जाती है उससे।।हो जाती है..
गौतम गणीश को, महावीर शिष्य को, वंदूँ मैं बारम्बार,
हाँ..... उनको वंदूँ मैं बारम्बार।। मैं तो आरती.....।2।।
चैत्यभक्ति का सुंदर विधान, कर मन हरषा है। कर मन....
गणिनी ज्ञानमति माता का नाम, ज्ञान की वर्षा है।। ज्ञान की....
''चंदनामती'' शक्ति मिले, चैत्यों की भक्ति मिले, जीवन सुधारूँ रे,
हाँ.....प्यारा प्यारा जीवन सुधारूँ रे।। मैं तो आरती..।।3।।

भजन

रचयित्री – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-हम जैन कुल में जन्मे हैं.....

गणिनी ज्ञानमती माता पर, अभिमान करो रे।
ये तो जैन कुल की शान हैं, गुणगान करो रे।।टेक.।।
इनने भारतीय संस्कृति की शान बढ़ाई,
ऋषभदेव प्रभु की सबसे बड़ी मूर्ति बनाई।।
मूर्ति प्रेरिका इस माता पर, अभिमान करो रे।
ये तो जैन कुल की शान हैं, गुणगान करो रे।।1।।
भाग्यशाली आप और हम, जो जन्मे आज हैं,
मूर्ति बनते हुए देखने का, जगा भाग्य है।
अपने पुण्य व सौभाग्य पर, अभिमान करो रे।
गणिनी ज्ञानमती माता पर, अभिमान करो रे।।2।।
जरा कल्पना करो, कि चौथा काल कैसा था,
ऋषभदेव पुत्री ब्राह्मी माँ का, त्याग कैसा था।
उनकी प्रतिकृति का ''चन्दना'', गुणगान करो रे।
गणिनी ज्ञानमती माता पर, अभिमान करो रे।।3।।